Causes of First World War

FOR-U.G.Sem-4,Unit-V

1914 में शुरू हान पाला प्रथम महायुद्ध एक अचानक घटना वाली घटना न थी बल्कि यह पिछले 40 वर्षों के दौरान यूरोपीय परिदृश्य पर घटनेवाले समग्र घटनाक्रम के चरम परिणति थी जिसने विश्व समुदाय को संकट में डाल दिया। संघर्ष का उद्गम यूरोप के दो सशस्त्र गुटों में बँट जाने से हुआ। दोनों गुट एक दूसरे से जलते थे और दोनों और शक्ति संचय का प्रयत्न जारी था। सेना में बड़ी तेजी से वृद्धि की जा रही थी। साम्राज्यवाद का भुत सबके सिर पर सवार था। विकृत एवं उग्र राष्ट्रीय यूरोपीय राज्यों का अभिन्न अंग बन चुका था। सभी राज्यों की अपनी अपनी महत्वाकांक्षाए थी और राज्य विस्तार के नशे में चूर होकर यूरोप के विविध देश शक्ति प्रदर्शन के लिए उतावले हो रहे थे ऐसे में तनावपूर्ण माहौल ने यूरोपीय वातावरण को विषाक्त कर दिया जिसके फलस्वरूप विश्व युद्ध होना अवश्यंभावी हो गया।

प्रथम महायुद्ध का बुनियादी कारण **कूटनीतिक गुप्त संधि प्रणाली** था। दरअसल यह प्रणाली जर्मनी का चांसलर बिस्मार्क की देन थी जिसे 1870 के फ्रैंको प्रशियन युद्ध के बाद जर्मनी के शत्रु देशों विरुद्ध इस प्रकार के संधि तंत्र तैयार करने का प्रयास किया। इस कदम में धीरे-धीरे यूरोप को हथियार बन विरोधी खेमों में बांट दिया जो की एक दूसरे से टकराते रहे। सर्वप्रथम जर्मनी ने 1879 में आस्ट्रिया के साथ इस

दोतरफा वचनबद्धता के साथ संधि की कि यदि रूस दोनों में से किसी एक शक्ति पर आक्रमण करता है तो दूसरा उसकी सुरक्षा में सहयोग देगा। 1882 में इटली भी इस गुड में सम्मिलित हो गया इस प्रकार जर्मनी इटली एवं ऑस्ट्रिया के मध्य एक त्रिगूट ट्रिपल एलाइंस बना जो फ्रांस तथा रूस के विरुद्ध रक्षात्मक तौर पर थी। दूसरी और फ्रांस के लिए यह संधि परेशान करने वाली थी। उसने सुरक्षा की दृष्टिकोण से रूस के साथ 1894 में संधि की। इंग्लैंड पर्याप्त समय से पृथक्करण की नीति का अनुपालन कर रहा था किंतु संधि प्रतिसंधियों तथा तत्कालीन राजनीति को देखकर उसने भी पार्थक्य की नीति को छोड़कर 1907 में रुस से संधि कर ली। इस प्रकार फ्रांस, रूस एवं इंग्लैंड ने त्रिदेशीय मैत्री संघ नामक अलग राजनीतिक संघ कायम कर लिया। इस प्रकार देखा जाए तो यूरोप दो सशस्त्र सैनिक कैंपों में बट गया। इन दोनों पक्षों के टकराने के साथ ही यूरोप की स्थिति हथियारबंद शांति समान हो गई। यूरोप की महाद्वीपीय शक्तियां हालांकि एक दूसरे के साथ युद्ध तो नहीं कर रही थी लेकिन एक दूसरे के प्रति ईर्ष्यालु रूख अपना रही थी जिसके कारण यूरोप के पूरे वातावरण में डर एवं शंका का बादल मंडराने लगा। सभी शक्तियां किसी बड़ी टकराव की आशंका से ग्रसित होकर तेजी से सैन्यीकरण की ओर उन्मुख हुई।

सैन्यीकरण दरअसल गुप्त समझौते प्रणाली से सीधे जुड़ा था एवं युद्ध के लिए जिम्मेवार कारणों में से एक था। 19वीं शदी में यूरोपीय राष्ट्रों

का विश्वास था कि राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए युद्ध आवश्यक है। प्राचीन रोमन की कहावत में कि 'यदि तुम शांति चाहते हो तो युद्ध के लिए तैयार रहो' में लोगों का पूर्ण विश्वास था, इसलिए यूरोपीय राष्ट्रीय ने अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने के लिए अपने देश में सैन्य शिक्षा अनिवार्य कर दी। अनेक यूरोपीय राष्ट्र अपनी आय का अधिकांश हिस्सा युद्ध की तैयारी पर खर्च कर रहे थे।अधिक सैन्यशक्ति महानता की निशानी बन गई। सैन्य तैयारी प्रत्येक राष्ट्र अपनी सुरक्षा को ध्यान में रखकर कर रहा था किंतु इससे सुरक्षा की भावना के स्थान पर भय, संदेह एवं परस्पर घृणा का वातावरण उत्पन्न हो रहा था। बढ़ते हुए सैन्यवाद ने यूरोपीय राजनीति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया। अब यह विश्वास बढ़ता जा रहा था कि अंतरराष्ट्रीय समस्याओं का समाधान केवल सैन्य शक्तियों के बल पर ही संभव है। ऐसे उन्मादी वातावरण में सैन्य अधिकारियों का स्थान देश की राजनीति में प्रमुख हो गया और वे असैनिक अधिकारियों पर हावी होते चले गए। जब भी कोई संकट होता तो वे सैन्य अधिकारी इसका समाधान युद्ध में ही खोजते। इस सैन्यवाद और युद्ध मानसिकता ने प्रथम विश्व युद्ध की स्थिति तैयार कर दी।

उग्र राष्ट्रवाद अथवा विकृत राष्ट्रवाद प्रथम महायुद्ध के लिए बहुत हद तक जिम्मेदार था। राष्ट्रवाद दरअसल फ्रांसीसी क्रांति की देन थी। जर्मनी एवं इटली का एकीकरण राष्ट्रवाद के उदय का सकारात्मक परिणाम था।

यूरोप के राष्ट्रवाद ने 1870 के पश्चात उग्र रूप धारण कर लिया था। इसी प्रक्रिया में लोगों के अंदर जातीय गर्व की भावना का विकास तेजी से होने लगा और वह अपने देश को दूसरे देशों से श्रेष्ठ समझने लगे जिसका परिणाम अंतरराष्ट्रीय संबंधों में घातक पड़ा। राष्ट्रवादी भावना की अति ने राष्ट्र के बीच पहले से बनी खाई को और गहरा कर दिया। उग्र राष्ट्रीयता कि भावना अंतरराष्ट्रीयता के लिए खतरा थी। इसी भावना के तहत फ्रांस जर्मनी से अल्सास- लॉरेंस प्रदेश प्राप्त करने का प्रयास कर रहा था। राष्ट्रीयता की भावना के कारण ही ऑस्ट्रिया एवं सर्विया में उत्तरोत्तर शत्रुता बढ़ रही थी असंतुष्ट बाल्कन जनता की असंतुष्ट राष्ट्रीय आकांक्षाओं ने ही बाल्कन प्रायद्वीप को बारूद का ढेर बना दिया जिसने पूरे यूरोप को तुरंत ही अपने घेरे में ले लिया। प्रसिद्ध इतिहासकार एस.बी.फे. ने अपनी पुस्तक 'द ओरिजिन ऑफ़ द वर्ल्ड वॉर' में उग्र राष्ट्रवाद को प्रथम विश्व युद्ध का प्रमुख कारण माना है।

To be continued...

Arun Kumar Rai

Asst.Professor

P.G.Dept.of History

Maharaja College,Ara.